यथार्थवाद और आदर्शवाद

आदर्शवाद = उदारवाद और आदर्शवाद यथार्थवाद के प्रतिद्वन्द्वी दृष्टिकोण है। यथार्थवाद जहाँ मनुष्य के स्वभाव और उसके समाज के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है वहीं उदारवाद मनुष्य के स्वभाव का सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है आशावादी दृष्टिकोण है यथार्थवाद की मूल संकल्पना शक्ति है। वहीं आदर्शवाद शांति को प्रमुख मानते है जहाँ यथार्थवाद राज्य राष्ट्र को सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था मानता है वहीं उदारवादीयों के अनुसार अंतर्राष्ट्रवाद को बढ़ावा देकर युद्ध को सीमित किया जा सकता है। आदर्शवाद उदारवाद का एक संस्करण माना जा सकता है जहाँ पर आदर्शवाद उदारवाद अतिशय आशावादी हो जाता है प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य हम उदारवाद के आदर्शवादी स्वरूप को देखते है जिसके प्रमुख प्रमाण दुसरो मिलता है जैसे राष्ट्र संघ की स्थापना की

रही। ऐसा माना गया कि सामूहिक सुरक्षा के माध्यम से विश्व शांति स्थापित की जा सकती है उदारवाद के दर्शन भिन्न ऐतिहासिक चरणों में होते है परन्तु यथार्थवाद की तुलना में उदारवाद अधिक आदर्शवादी दृष्टिकोण रखता है। शीत युद्ध के समापन के पश्चात जॉर्ज बुश द्वारा प्रस्तावित नयी विश्व व्यवस्था उदारवादी व्यवस्था पर आधारित थी। भूमण्डलीकरण के युग में उदारवाद एक शक्तिशाली विचार धारा के रूप में उभर रहा है। शीत युद्ध के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भू राजनीति का स्थान भू आर्थिकी ने ले लिया अतः यथार्थवाद पर उदारवाद की विजय के रूप में देखा जाता है। किन्तु देशों की विदेश नीतियों में परिवर्तन देखा जा सकता है विश्व आर्थिक एकीकरण की ओर बढ़ रहा है विशेषज्ञों के अनुसार एवं आर्थिक एकीकरण के कारण स्थायी विश्व शांति की स्थापना कहा जाता है।

इतिहास :-

उदारवाद वादी चिंतन का आरम्भ 1517 के आसपास डे. Erasmus के चिंतन में देख सकते हैं Erasmus के अनुसार युद्ध अनुपयोगी है अतः यूरोप के राजाओं को शांति स्थापना का प्रयास करना चाहिए.

विलियम पेन :- यूरोप के एक संयुक्त पार्लियामेंट का विचार रखा है जिसे आधुनिक यूरोपियन संसद का आरम्भ माना जा सकता है।

शांति की सम्भावनाओं को व्यक्त करते हैं उन प्रवृत्तियों को सीमित और समाप्त करना चाहते हैं जो युद्ध को बढ़ावा देते हैं उदारवाद तथा यथार्थवाद के मध्य ~~मूल~~ विवाद मूल मुद्दा शक्ति है उदारवादी शक्ति को केन्द्रीय स्थान नहीं देते हैं वहीं यथार्थवादी शक्ति को अंतर्राष्ट्रीय शक्ति का केन्द्र मानते हैं यथार्थवादियों ने कहा शक्ति संघर्ष समाप्त नहीं किया जा सकता है शक्ति का प्रबन्धन किया जा सकता है जबकि उदारवादियों के अनुसार नैतिक ~~युद्ध~~ नियमों का पालन करके शांति स्थापित की जाती है यह राष्ट्रों के शांति पूर्ण सह अस्तित्व में विश्वास रखते हैं

निष्कर्ष

आदर्शवाद और यथार्थवाद दोनों ही अतिवादी विचार धाराएं हैं नेबुर ने यथार्थवादियों को निराशा की संतान तथा आदर्शवादियों को प्रकाश की संतान माना है।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति अत्यन्त जटिल विषय है इसको समझने के लिए कोई एक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है यथार्थवाद वह आदर्शवाद परम्परावाद और वैज्ञानिकवाद दोनों का समन्वय किया जाना ~~चाहिए~~ आवश्यक है अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विशेषज्ञ इस नवीन दृष्टिकोण को समन्वयवादी दृष्टिकोण कहते हैं मैन, लिंकन ओर्ड भी समन्वय का समर्थन करते हैं नेबुर के अनुसार यथार्थवाद की कुटिलता

को आदर्शवाद की नैतिकता से जोड़ देना चाहिए।
इसी प्रकार आदर्शवादियों को आशावादिता को यथार्थ
वादियों की व्यवहारिकता से जोड़ देना चाहिए।
कुल मिलाकर यथार्थवादी और आदर्शवादी एक ही
पैमाने पर स्थित हैं यथार्थवादी आक्रामक एवं राष्ट्रीय
हितों को प्राथमिकता देते हैं। तात्कालिक हितों महत्व
पूर्ण मानते हैं। जबकि उदारवादी अधिक न-उग्र
है और व्यापक हितों को महत्व देते हैं दोनों एक-
दूसरे के पूरक हैं।